मौर्यों की स्थापत्यकला*

BY

डॉ सुखबीर सिंह*

सहायक आचार्य (संस्कृत), राजीव गान्धी राजकीय महाविद्यालय

साहा, अम्बाला (हरियाणा)

डॉ संजीव कुमार

सहायक आचार्य (संस्कृत), ताऊ देवी लाल राजकीय महिला महाविद्यालय

मुरथल, सोनीपत (हरियाणा)

भारतवर्ष सृष्टि के आदिकाल से ही ज्ञान-विज्ञान एवं कलाओं का समुपासक रहा है, जिसके साक्षात् निदर्शन वेद, उपनिषद्, आरण्यक, षड्दर्शन एवं भारतीय साहित्य या यूं कहें कि सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय हमारी समुज्ज्वल विरासत का परिचायक है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारतीय मनीषा तो – **"न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पम् न सा विद्या न सा कला। न तत्कर्म न योगोऽसौ नाटके यन्न दृश्यते** " भरतनाट्यशास्त्र के इस उद्घोष वाक्य में नाटक को परिभाषित करते हुये मानो नाटक के व्याज से भारतीय जीवन को ध्वनित कर रही है। सुप्रसिद्ध नीतिकार भर्तृहरि ने कहा है –

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

तृणन्न खादन्नपि जीवमानः तद्भाग्धेयं परमं पशूनाम् ॥ (नीतिशतकम्, श्लोक सं- 12)

* Received 07 May 2021, Accepted 11 May 2021, Published 19 June 2021
* Correspondence Author

उपर्युक्त पद्य में सही अर्थ में मनुष्यत्व को लक्षण सहित परिभाषित किया है। वास्तव में संस्कृत वाङ्मय में ज्ञान – विज्ञान एवं कलाओं की वह ज्ञान गङ्गा प्रवाहित हो रही है जिसमें अवगाहन कर मानव मात्र अपने – अपने सामर्थ्य के अनुसार रत्नों को धारण करता है।

तथापि वैदिक काल से प्रारम्भ हुई यह ज्ञान गङ्गा जो कि इसका सूक्ष्म एवं अमूर्त्त रूप है, वह काल प्रवाह से स्थूल रूप में, ललित कलाओं के रूप में मूर्तिमान् अवस्था को प्राप्त हुई और आज भी अजस्र एवं अनवरत रूप में नूतन आयामों को प्रप्त होती हुई मानव-वृन्द के कल्याण हेतु सुधीजनों को सहृदयता प्राप्त कराती हुई , नवनवोन्मेषशालिनी वुद्धि के रूप में शोकार्त्त हृदयों का सन्ताप निवारण करती हुई , आधिव्याधि प्रपीडित सामाजिकों की भेषज के रूप में तथा समयचक्र से भी जिनकी गति अव्याहत रही , ऐसे ऐतिहासिक अभिलेखों, स्मारकों, भवनों के रूप में मूर्तिमती सजीवता को प्राप्त करती हुई एक सभ्यता से दूसरी सभ्यता , एक युग से दूसरे युग में प्रस्फुटित होती हुई वार वार परिस्पन्दन करती रहती है।

यह संचरण-शीलता ही इसका जीवट है जो कि विभिन्न सम्राटों के सम्राज्यों की समुद्र पर्यन्त सीमाओं को आक्रान्त कर मानो संजीवनी विद्या को तिरोहित कर सच्चे अर्थों में अमरत्व को प्राप्त हो रही है।

ललित कलाएँ विशेष रूप से स्थापत्य कला इसके चक्षुरूप हैं, जिसके द्वारा इसने असंख्य कालखण्डों के अतीत को आत्मसात् कर रखा है। भारत का ऐसा ही एक समुज्जवल अतीत खंड है "मौर्य साम्राज्य"। क्योंकि जिस साम्राज्य की नीव माँ भारती (संस्कृत) के सच्चे एवं तपोनिष्ठ सपूत चाणक्य की कौटिल्य नीतियों की परिणति हो तथा जिसकी भीत्तियों पर चन्द्रगुप्त, बिंदुसार एवं अशोक जैसे महान् भारतीय सम्राटों का भुजबल स्वशौर्यगाथा को वज्रलेपित कर रहा हो, वह कालखण्ड एवं उस कालखण्ड की स्मारिकाएँ आज भी न केवल भारतवर्ष अपितु सम्पूर्ण विश्व को उस भव्य बृहद् भारत की दुन्दुभियों से गुञ्जायमान कर देता है तथा सैन्य

प्रयाणों के लिए शस्त्रत्याग किन्तु शास्त्रधारणा द्वारा विश्वविजय के उस अलौकिक एवं अनिर्वचनीय सोपानों के माध्यम से मानो आज भी उस वसुन्धरा की स्वर्गसमकक्षता को इंगित कर रहा है। यद्यपि :-

"राज्ञो हि दुष्टनिग्रहः शिष्टपरिपालनञ्च धर्मो न पुनः शिरोमुण्डनं जटाधारणं वा"

नीतिवाक्यामृत के इस वाक्य के अनुसार अशोकनीति को लाञ्छित करने वाले सैकड़ों आलोचक आज भी विद्यमान हैं किंतु यह भी सार्वभौमिक तथ्य है कि राज्यों अथवा साम्राज्यों का उदय, पतन हेतु ही होता है। तथा –

"मनुज नहीं बलवान है समय होत बलवान" इस उक्ति के अनुसार समय की बलवत्तर अवस्था सर्वथा सिद्ध है। अतः पुनः उसी कालखण्ड मौर्यसाम्राज्य की उन कालजयी कृतियों चाहे वे भग्नावस्था में ही क्यों ना हों उन्हें स्मृतियों के व्याज से स्मरण करके **"सत्यमेव जयते"** जैसे महा उद्घोष के पोषक उस साम्राज्य के भग्नावशेषों के माध्यम से आईए मिलकर मौर्यसाम्राज्य के स्थापत्य कला का सिंहावलोकन करते हैं।

यह सर्वविदित, सुस्पष्ट तथा प्रमाणित तथ्य है कि सम्राट् अशोक ने अनेक स्तूपों, चैत्यों, विहारों और भवनों का निर्माण करवाया था। दिव्यावदान में स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है कि सम्राट अशोक ने चौरसी हजार स्तूप वनवाये थे।[1]

"महावंसो" ग्रंथ भी इसी तथ्य को प्रतिपुष्टि प्रदान करने वाली अनुश्रुति से युक्त है।[2] महावंसो में अशोक द्वारा चौरासी हजार धर्मस्कन्धों तथा बिहारों के निर्माण की बात दोहराई गई है। चीनी यात्री ह्वेनसांग भी इसी तथ्य को इंगित करते हैं।[3] किंतु हमे प्रतीत होता है कि यद्यपि चौरासी हजार स्तूप निर्माण तथा अशोक द्वारा निर्मित कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में सोलह

---

[1] Cowell and Neil : Divyavadan 10-429
[2] महावंसो 5/80 एवं 5/174-75
[3] Beal : Buddhist Records of the western world Book VIII Page- 94

लाख घरों का निर्माण[4] वास्तव में अतिरञ्जना से व्याप्त तथ्य है तथापि यह तो निर्विवाद सत्य है कि अशोक ने कलाप्रिय होने के कारण से ही असंख्य स्थापत्य कलाकृतियों का निर्माण करवाया था क्योंकि वह सच्चे अर्थों में स्थापत्यकलाविशारद था।

फाईयान अशोक की राजधानी पटना (पुष्पपुर, पाटलिपुत्र) का वर्णन करते हुए लिखता है कि पुष्पपुर राजधानी के रूप में विख्यात है [5] तथा जिसके राजप्रासाद तथा सभाभवन अलौकिक हैं, जो मानवीय मनीषा से परे की वस्तु प्रतीत होते हैं तथा असुरों द्वारा निर्मित हैं।

यह सर्वविदित तथ्य है कि अजातशत्रु ने गंगा और शोण नदी के संगम पर पाटलिपुत्र नगर की स्थापना की थी किंतु यह प्राचीन पाटलिपुत्र था जिसकी पुष्टि महाभाष्य करता है।[6] अशोक की पाटलिपुत्र राजधानी के चारों ओर 600 फीट चौड़ी **परिखा,** नगर रक्षा हेतु प्रदत्त कौटिल्य के सिद्धांतों का साक्षात् समर्थन करती थी।[7] गार्गी संहिता में कीचड़ से भरी हुई परिखा का वर्णन पाटलिपुत्र के लिए प्राप्त होता है।[8] पुष्पपुर निर्माण में मौर्यों द्वारा जो सर्वाधिक विलक्षणता प्रयोग की गई वह थी लकड़ी के प्रसाद तथा लकड़ी द्वारा नालियों (Drainage) की व्यवस्था। जिनकी पुष्टि पाटलिपुत्र में खुदाई के दौरान प्राप्त 40 फीट लंबी लकड़ी की नाली से होती है।

इसके अतिरिक्त मौर्यों द्वारा निर्मित नगर की प्राचीर जो कि देवपथ से युक्त थी। वह अत्यन्त ख्यातिलब्ध एवं दर्शनीय थी।[9] इसके अतिरिक्त विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस नाटक में चन्द्रगुप्त के राजप्रासाद को "सुगाङ्ग" नाम से अभिहित किया गया है। मौर्यसाम्राज्य के भवनों में प्रस्तर निर्मित भवनों तथा स्तम्भों पर चमकदार ओप का प्रयोग किया जाता था। कुमराहार की खुदाई में डी.वी. स्पूनर तथा काशी प्रसाद जायसवाल रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा एक विशाल भवन के

---

[4] राजतरङ्गिणी- 1/102-104
[5] जगमोहन वर्मा कृत फाइयान, पृ. 58
[6] "अनुगङ्गं हस्तिनापुरम्। अनुगङ्गं वाराणसी। अनुशोणं पाटलिपुत्रम्" 2-1-16 सूत्र पर महाभष्य।
[7] कौटिलय अर्थशास्त्र – 3/2
[8] " ततः पुष्पपुरे प्राप्ते कर्दमे प्रथिते हिते" गार्गी संहिता, युग पुराण - 97
[9] अवयवशो हि आख्यानं व्याख्यानम्। पाटलिपुत्रं चावयवशो व्याचष्टे ईदृशा अस्य प्राकारा इति 4/3/16 महाभाष्यम्।

स्तम्भों की प्राप्ति हुई जो कि 80 स्तम्भ वाला था । मौर्यसाम्राज्य की स्थापत्यकला के निदर्शनभूत सारनाथ, तक्षशिला, भरहुत एवं सांची भी हैं जो कि अपनी पाषाण वेष्टनियों, स्तूपों, स्तम्भों के लिए समूचे विश्व में अपना सानी नहीं रखते । क्या कोई भारतीय अपने जीवन में तिरंगे में आत्मा के रूप में समाए हुए अशोक चक्र को भुला सकता है अथवा सारनाथ के अशोक स्तम्भ के शीर्ष भाग पर विराजमान शक्ति के प्रतीक सिंहों को ।

मौर्यों द्वारा निर्मित पाषाण वेष्टनियों तथा ओपयुक्त भवन स्तम्भ अपने आप में अद्वितीय हैं।

मौर्यों द्वारा निर्मित पाषाण वेष्टनियों में साञ्ची के स्तूप जो कि मध्यप्रदेश में विद्यमान हैं, पत्थर द्वारा निर्मित पाषाण वेष्टनियों से परितः व्याप्त है । इस पाषाणवेष्टनी की विशेषता यह है कि यह सर्वथा अलंकरणों से रहित है ।

सारनाथ, जहां पर भगवान बुद्ध ने धर्म-चक्र-प्रवर्तन किया था वहाँ पर सम्राट् अशोक ने गौतम बुद्ध से सम्बन्धित अवशेषों को संरक्षित करते हुए एक प्रस्तर स्तम्भ का निर्माण करवाया था । सारनाथ से एक अद्भुत पाषाणवेष्टनी प्राप्त हुई है जिसकी विशेषता यह है कि यह एक ही पत्थर से, विना किसी जोड़ का प्रयोग करते हुए बनाई गई है । जिसके विषयं में महान् ऐतिहासिक सत्यकेतु लिखते हैं कि - "सारनाथ से प्राप्त पाषाणवेष्टनी वहुत ही सुन्दर, चिकनी तथा चमकदार है । इसे वनाने का खर्च संवहिका नाम के किसी व्यक्ति द्वारा वहन किया गया था । चमकदार ओप होने के कारण जिन्हें मौर्ययुग का स्वीकार किया जाता है।[10]"

मौर्यों द्वारा निर्मित बोधगया में चार स्तम्भों वाला बोधिमण्डप भी मौर्यों की स्थापत्यकला से सम्बन्धित है । इसको अशोक महान् द्वारा निर्मित माना जाता है । पाटलिपुत्र की पुरातात्त्विक खुदाई के समय भी कतिपय पाषाण वेष्टनियों की प्राप्ति हुई है जो कि एक ही पत्थर द्वारा निर्मित होने के कारण अशोक के समय की स्वीकृत की जाती हैं ।

---

[10] मौर्यसाम्राज्य का इतिहास पृ. सं. 641-642

सम्राट अशोक द्वारा तक्षशिला में भी एक बहुत ही भव्य प्रस्तर स्तंभ का निर्माण करवाया गया था। सम्राट अशोक अपनी युवावस्था के समय तक्षशिला का कुमार (Governor)भी रह चुका था। अतः सम्राट अशोक को तक्षशिला से विशेष अनुराग था। मौर्यों के समय तक्षशिला शिक्षा का एक सुप्रसिद्ध केन्द्र था। यहाँ पर न केवल भारतवर्ष अपितु विश्व के अनेक सम्राज्यों के जिज्ञासु पठनार्थ आते थे। कालान्तर में महर्षि पतञ्जलि ने भी तक्षशिला को अपनी कर्मभूमि वनाया था , ऐसे तथ्य प्राप्त होते हैं।

कुछ ऐतिहासिकों का मत है कि सम्राट् अशोक ने उसी स्थल पर प्रस्तर स्तम्भ का निर्माण करवाया था, जहाँ पर युवराज कुणाल को अन्धा किया गया था। कुणालावदान में ऐसी कथा मिलती है कि महारानी तिष्यरक्षिता ने षडयन्त्र पूर्वक अधीयउ के स्थान पर अंधीयउ ऐसा लिखकर कुमार कुणाल को अन्धा करवा दिया गया था।

उपर्युक्त कारणों में से कारण चाहे कुछ भी हो किन्तु इस बात के साक्ष्यरूप में तक्षशिला की पुरातात्त्विक खुदाई के अंतर्गत प्राप्त स्तूपों के भग्नावशेष इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मौर्यों ने तक्षशिला में भव्य निर्माण करवाए थे। कालान्तर में ह्वेनसांग ने भी इस स्तूप को देखा था। जैसा कि सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक सत्यकेतु ने लिखा है - सम्भवतः मौर्ययुग के प्राचीन स्तूप को ही परिवर्तित कर बाद के समय में एक विशाल स्तूप का निर्माण कराया गया था। जिसे ह्वेनसांग ने देखा था और जिसके अवशेष अब भी विद्यमान हैं।

वस्तुतस्तु मौर्यों ने विशेषतया सम्राट अशोक ने महात्मा बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित स्थलों तथा हम समझते हैं कि अपने जीवन से सम्बन्धित कतिपय घटनाओं की स्मृतियों को भी आत्मसात् करते हुए नैकविध स्तूपों, प्रस्तर स्तम्भों तथा भवनों का निर्माण करवाया था। अपने धम्म के

प्रचारार्थ भी अशोक ने प्रजा हेतु अनेक स्तम्भों पर अपने लेख उत्कीर्ण करवाए थे ।[11] अशोक के ये अभिलेख अपने लिखित उद्देश्यों के तुल्य ही कलात्मक महत्त्व भी रखते हैं ।

चुनार के बलुए पत्थर से निर्मित ये स्तम्भ भी अनुपम निर्माण सौन्दर्य को अभिव्यक्त करते हैं । इन स्तम्भों में प्रयुक्त पत्थर जिनको सम्भवतः तराश कर अथवा वज्रलेप से लेपित कर स्थापित किया गया था, अपने आप में एक महान आश्चर्य का विषय है ।

मौर्य युगीन गुफाभवन भी पत्थर को काटकर बनाए जाते थे । हम यह तो नहीं जानते कि मौर्यों के समय में आज की भान्ति उत्कृष्ट उपकरण थे अथवा नहीं किन्तु मौर्यकालीन गुहाभवनों की निर्मितियाँ एक आश्चर्यजनक किन्तु सुखद कौतूहल को उत्पन्न अवश्य करती हैं । इन गुफा भवनों में गया मण्डल के अन्तर्गत विराजमान बराबर की पहाड़ियों पर आजीवक सम्प्रदाय हेतु वनाए गए गुहाभवन उदाहरण रूप हैं ।

सम्राट अशोक की माता आजीवक सम्प्रदाय से थी । अतः अपनी माता के प्रति आदरभाव द्योतित करने हेतु अशोक ने आजीवक सम्प्रदाय के साधुओं हेतु इन गुहाभवनों का निर्माण करवाया था। अथवा हम यह भी मन्तव्य रखते हैं कि अशोक धार्मिक रूप से बड़ा सहिष्णु व्यक्ति था । उसकी स्पष्ट उक्ति थी कि सर्वे पाखण्डाः सुखेन वसेयुः ।

अतः प्रजा में सम्भाव बना रहे एतदर्थ अशोक ने आजीवकसम्प्रदाय हेतु गुहाभवनों का निर्माण करवाया था। कालान्तर में अशोक के वंशज राजा दशरथ ने भी विशाल चट्टानों को कटवाकर वहाँ भवनों का निर्माण करवाया । जिनमें एक गुफाभवन लोमश ऋषि की गुफा के नाम से अत्यन्त प्रसिद्ध है। वस्तुतस्तु मौर्यकालीन यह गुहाभवन कालान्तर के गुहाभवनों के लिए उपजीव्य हैं ।

अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर निर्विवाद रूप से बिना किसी भी विप्रतिपत्ति के यह सत्य, इतिहास के गर्भ से प्रसूति प्राप्त करता है कि मौर्य युगीन समय स्थापत्यकला के विषय में भी

---

[11] मौर्य साम्राज्य का इतिहास पृष्ठ संख्या 641

धनाढ्य था। किंतु मौर्यों को विशेषरूप से सम्राट अशोक को वह ख्याति प्राप्त नहीं हुई है , जिसका वह अधिकारी था। अशोक ने सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता दर्शायी किन्तु सभी धर्म अशोक के प्रति सहिष्णु नहीं रह सके । सम्भवतः संस्कृतव्याकरण के महान् आचार्य महर्षि कात्यायन ने **"षष्ठया आक्रोशे"** 6-3-21 सूत्र पर "देवानां प्रिय इति च " वार्तिक की रचना आक्रोश गम्यमान्न द्योतित करके, अशोक के लिए प्रचलित विरुद देवानां प्रियः, प्रियदर्शी, सम्राट् अशोक की उपाधि देवानां प्रियः ऐसा ही रहने दिया इसके समस्तपद देवप्रियः का निषेध कर दिया तथा समयान्तर होते-होते कहीं-कहीं देवानां प्रियः व्याज निन्दा तथा मूर्ख के रूप में भी प्रयोग होने लगा जो कि सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है।

जैसे कि हमने पहले भी लिखा कि इस पवित्र भारत भू तथा माँ भारती ने नानाविध रत्नों को अपने पयसामृत से पल्लवित एवं पोषित किया है । अतः हमें बिना किसी पूर्वाग्रह अथवा दुराग्रह से रहित होकर भारतीय कालपुरुषों को वही गौरवास्पद स्थान प्रदान करना चाहिए जिसके वे सभी अधिकारी हैं । शेष सुधीजनों के विचारार्थ है । हम तो अंत में केवल इतना ही मन्तव्य रखते हैं कि वस्तुतस्तु मौर्य युगीन स्थापत्य कला के इंगित मात्र आज हमारे समक्ष है । आवश्यकता है पुनः तत्त्वान्वेषण की । हमें पूर्ण विश्वास है कि आधुनिकता के इस दीर्घ दीर्घतर अट्टालिकाओं के निर्माण में लग्न मनुष्य की ऐतिह्यवृत्ति पुनः इसे जिज्ञासुता प्रदान करती हुई किसी न किसी कालखण्ड की सैर में पुनः ले जाएगी ।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. मौर्य साम्राज्य का इतिहास, लेखक- सत्यकेतु विद्यालङ्कार, प्रकाशक- श्री सरस्वती सदन मसूरी एवं ए 1/32 सफदरजंग एन्कलेव , दिल्ली - 16
2. अशोकविजयम् राम जी उपाध्याय
3. अर्थशास्त्रम् (कौटिल्य), व्याख्याकार- वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा, विद्याभवन, वाराणसी।
4. मुद्राराक्षसम्(विशाखदत्त),व्याख्याकार- डॉ निरूपण विद्यालङ्कार, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार , मेरठ।

5. दिव्यावदान, Edited by P L VAIDYA, Published by The Mithila Institute & Post Graduate Studeies and Research in Sanskrit Learning , Darbhanga, 1959
6. अष्टाध्यायी (पाणिनि), व्याख्याकार- पं. ईश्वरचन्द्र, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली
7. महाभाष्यम् (पतञ्जलि), व्याख्याकार- श्री भार्गव शास्त्री जोशी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली ।
8. राजतरङ्गिणी (कल्हण), व्याख्याकार- रामतेजशास्त्री पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली ।
9. Age of Nandas and Mouryas, Edited by K.A. NILAKANTHA SASTRI, Motilal Banarsidass, Banaras
10 नीतिवाक्यामृतम्(सोमदेवसूरि), व्याख्याकार-सम्पादक एवं प्रकाशक- पं. सुन्दर लाल शास्त्री, ठाकुरवाडी, वाराणसी ।
11 Asoka and the Decline of the Mauryas (Romila Thapar) Oxford India Perennials
12 नीतिशतकम् (भर्तृहरि), व्याख्याकार- पं. विजय शंकर मिश्र, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफीस, वाराणसी |
13 The Divyāvadāna, a Collection of Early Buddhist Legends, Edward Byles Cowell, Robert Alexander Neil, Oriental Press, 1886
14 Buddhist Records of the Western World (English, Hardcover, Beal Samuel), Publisher: Munshiram Manoharlal Publishers
15 फाहियान की भारत यात्रा, जगमोहन वर्मा
16 नाट्यशास्त्रम् (भरतमुनि), अनुवादक- भोला नाथ शर्मा, प्रकाशक- साहित्य निकेतन कानपुर

The Journal of Oriental Research Madras

certify to all that

डॉ सुखबीर सिंह

has been awarded Certificate of Publication for research paper titled

मौर्यों की स्थापत्यकला

Published in Vol. XCII-XXXI-June-2021 of **The Journal of Oriental Research Madras** with ISSN:: 0022-3301

UGC Care Approved International Indexed and Refereed Journal

Impact Factor 7.215
(pp 49-57)

Advisory Editor, **The Journal of Oriental Research Madras**